# ''जनजातीय समाज एवं लोक साहित्य''

**डॉ. नकलसिंह नौरे**

सम्पूर्ण संसार का जनजातीय समाज अपने–अपने सुदूर ग्रामीण अंचल में परम्परानुसार वर्षों से 'लोकसाहित्य' को जीवित रखा है। स्वयं शोधार्थी जनजातीय समुदाय की गोंडी, कोरकू, भारिया साहित्य पर विगत 2004 से निरन्तर इस पर कार्य कर रहा हूं। मेरे शोध कार्य के पूर्व से अभी तक गोंडी भाषा के लगभग 400 सौ मौलिक लोकगीत संग्रहित हो चुके हैं, एवं साथ ही गोंडी, कोरकू शब्दावली पर निरन्तर कार्य कर रहा हूँ। जनजातीय समाज में लोकसाहित्य की अपार संभावनाएँ हैं, जिनका कार्य अभी अल्प मात्रा में हुआ है। इसे समय रहते संरक्षण की महती आवश्यकता है।